

श्री कृष्ण की आरती: आरती कुंजाबेहारी की

पद 1

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की॥

पद 2

गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही
आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली;
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक;
ललित छवि श्यामा प्यारी की॥

पद 3

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसै।
गगन सों सुमन रासि बरसै;
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग;
अतुल रति गोप कुमारी की॥

पद 4

जहाँ ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा।
स्मरन ते होत मोह भंगा;
बसी शिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच;
चरन छवि श्रीबनवारी की॥

पद 5

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू।
चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू;
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव फंद;
टेर सुन दीन भिखारी की॥